श्रीगौरकरुणाने अबाधगति अर्थात् बिना किसी रोक-टोकके अपनी स्वतन्त्रताकी रक्षा करते हुए प्रसारित होकर प्रबल बाढ़के समान समस्त जगतको उसी दुर्लभ प्रेमामृतमें आप्लावित कर दिया। श्रीमन्महाप्रभुने अपनी असमोर्ध्व करुणाको मुक्त कर दिया। श्रीगौरहरिने अपनी करुणा शक्तिसे कह दिया "करुणा! मैंने तुम्हारे निकट आत्मसमर्पण कर दिया है। तुम जिस दिशामें जितनी दूर जाना चाहती हो, [जाओ और वहाँ जाकर] अपराधी, विमुख, तटस्थ, श्रद्धालु, अश्रद्धालु, साधारण भक्त और विशेष भक्त सभीको प्रेमकी बाढ़में डुबो दो।"

श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज

।। श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः ।।

श्री श्री भागवत पत्रिका

वर्ष—८ राष्ट्रभाषा हिन्दीमें श्रीश्रीरूप-रघुनाथकी वाणीकी एकमात्र वाहिका संख्या—(३-४)

विरह-विशेषांक—३

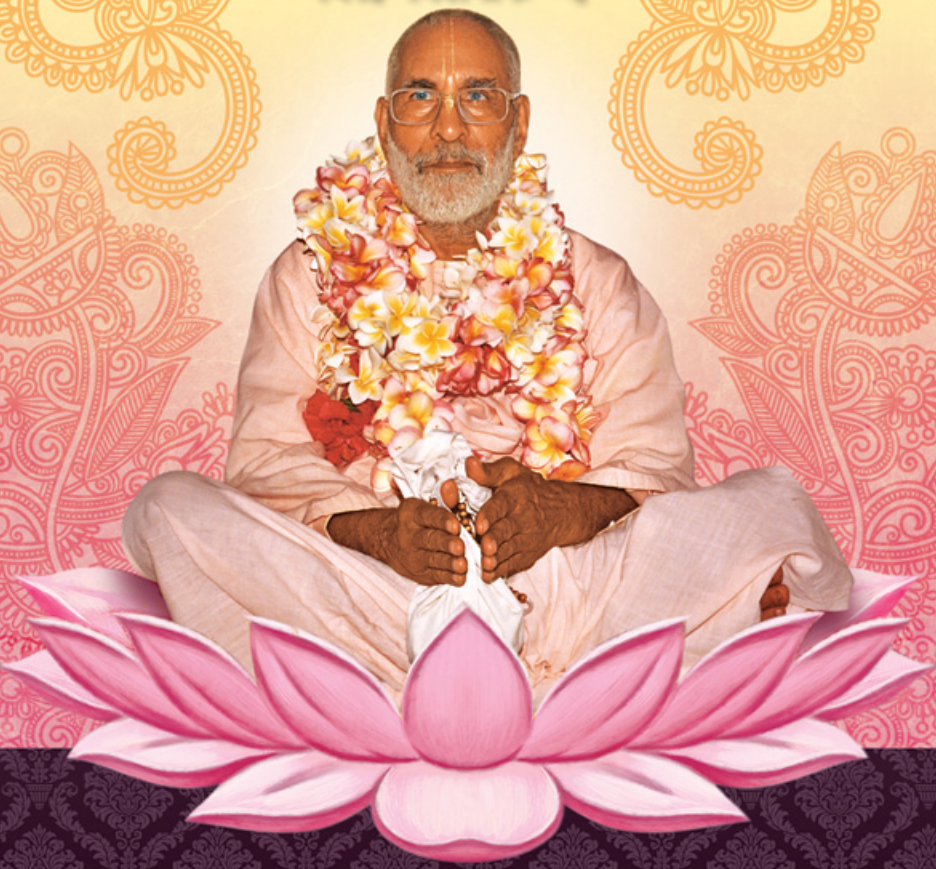

वर्ष ८ | श्रीगौराब्द ५२५, त्रिविक्रम–वामन मास | संख्या ३–४
वि. सं. २०६८, ज्येष्ठ–आषाढ़ मास ; सन् २०११, १८ मई–१५ जुलाई

विषय–सूची

विरह–विशेषांक (संख्या–३)

श्रीलभक्तिवेदान्त नारायण महोदयाष्टकम्..... ४
डॉ. वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी

अन्यान्य प्रमुख गौड़ीय–वैष्णवोंकी पुष्पाञ्जली..... ९

"परमभागवतजन साक्षात् तीर्थस्वरूप हैं"..... ९
श्रीमद्भक्तिजीवन आचार्य महाराज

श्रीलभक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजकी आविर्भाव तिथि पूजामें दीनकी वाणीरूपी पुष्पाञ्जलि..... १४
श्रीमद्भक्तिसर्वस्व गोविन्द महाराज

पूज्यपाद महाराजजीके चरणोंमें आन्तरिक पुष्पाञ्जली..... २०
श्रीमद्भक्तिविकास गोविन्द महाराज

आन्तरिक कृतज्ञता..... २२
श्रीमद्भक्तिविबुध बोधायन महाराज

व्रजके विख्यात विद्वानोंकी पुष्पाञ्जली..... २४

परहितकर्ता पूज्यश्री महाराजजीकी मेरे प्रति कृपा... २५
डॉ. वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी

महान युगपुरुष तथा वर्तमान आचार्योंमें अग्रगणीय–श्रीभक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज २९
डॉ. गोस्वामी अच्युत लाल भट्ट

दिव्यसूरि पूज्य महाराजश्री अदृश्य नहीं, बल्कि विशिष्टरूपमें श्रीकृष्णके धाममें विराजमान..... ३५
श्रीविष्णु पाण्डे (शास्त्रीजी)

पूज्य महाराजश्री–रागानुगा–भक्तिकी जीती–जागती (जीवन्त) प्रतिमूर्ति..... ४१
गोस्वामी श्रीदीपक कुमार भट्ट

वाणी–वैशिष्ट्य–सम्पद्–१

[श्रील गुरुदेव और श्रीमन्महाप्रभु]

श्रीश्रीमन्महाप्रभुके दानकी विशेषता..... ४७
श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज

श्रीश्रीभागवत पत्रिकाकी नयी Website ६३
श्रीश्रीभागवत–पत्रिकाके ग्राहकोंसे वार्षिक सदस्यता–शुल्क भुगतानके लिए निवेदन ६४

संस्थापक एवं नियामक

नित्यलीलाप्रविष्ट परमहंस ॐ विष्णुपाद
अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजके

अनुगृहीत
नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद
श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज

प्रेरणा-स्रोत
नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद
श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त वामन गोस्वामी महाराज

सम्पादक—श्रीमाधवप्रिय दास ब्रह्मचारी,
श्रीअमलकृष्ण दास ब्रह्मचारी

प्रचार सम्पादक—त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त वन महाराज,
त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त सिद्धान्ती महाराज

प्रचार सह-सम्पादिका—श्रीयुता उमा देवी दासी,
श्रीयुता सुचित्रा देवी दासी

सहकारी सम्पादक संघ—
(१) डॉ. श्रीवासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी, पी-एच. डी., डी. लिट्. (संघपति)
(२) डॉ. श्रीअच्युतलाल भट्ट, एम. ए., पी-एच. डी.
(३) त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त तीर्थ महाराज
(४) डॉ. (श्रीमती) मधु खण्डेलवाल, एम. ए., पी-एच. डी.
(५) श्रीपरमेश्वरी दास ब्रह्मचारी 'सेवानिकेतन'
(६) श्रीपुरन्दर दास ब्रह्मचारी 'सेवाविग्रह'

कार्याध्यक्ष—श्रीपाद प्रेमानन्द दास ब्रह्मचारी 'सेवारत्न'

कार्यकारी मण्डल—श्रीविजयकृष्ण दास ब्रह्मचारी, श्रीमदनमोहनदास ब्रह्मचारी, श्रीप्राणकृष्णदास ब्रह्मचारी, श्रीगौरराजदास ब्रह्मचारी, श्रीदामोदरदास ब्रह्मचारी, श्रीसञ्जय दास ब्रह्मचारी, श्रीजगदीशप्रसाद दासाधिकारी, भक्त सोनु

ले-आउट और डिजाइन—श्रीकृष्णकारुण्य दास ब्रह्मचारी, श्रीविकास ठाकुर

प्रकाशक—त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त माधव महाराज

श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ
जवाहर हाट, मथुरा-२८१००१ (उ. प्र.)
दूरभाष : 08791273306

श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति ट्रस्टकी ओरसे
त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त माधव महाराज द्वारा
श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, जवाहर हाट, मथुरासे प्रकाशित।

Visit us at:
www.bhagavatpatrika.com
e-mail:
mathuramath@gmail.com,
vijaykrsnadas@gmail.com

विरह–विशेषांक
(संख्या–३)

श्रीलभक्तिवेदान्त नारायण

डॉ. वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी, डी.लिट्, सप्ताचाय

श्रील श्रीभक्तिवेदान्त नारायण महोदयम्।
युगाचार्य प्रतिष्ठायां भजे ह्यानन्दसंस्थितम्॥१॥

इस कार्तिक मासकी शुक्ल सप्तमीके दिन (३१ अक्टूबर २००३ को) अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण महाराजको बरसाना धाममें व्रजवासियोंके द्वारा 'युगाचार्य' सम्मान–पदसे गौरवान्वित किया गया है। आज कार्तिक शुक्ल त्रयोदशीके दिन (६ नवम्बर २००३ को) श्रीवृन्दावन स्थित आनन्द धाममें विराजित उनको मैं अनेक नमन करता हूँ॥१॥

©Vasanti dāsī

©Vasanti dāsī

भक्तिवेदान्त वन्द्यं तं कृष्णदेवप्रियं सदा।
नानादेश नरैः पूज्यं नारायणमहं भजे॥८॥

जो भगवान् श्रीकृष्णदेवके नित्य प्रिय हैं, जो विभिन्न देशोंके भक्तोंके पूज्य गुरु हैं, उन वन्दनीय श्रीलभक्तिवेदान्त नारायण महाराजको मैं नमन करता हूँ॥८॥

©Krṣṇakārunya

शिष्याभिप्रायमालम्ब्य वासुदेवेन धीमता।
ऊर्जे शुक्लत्रयोदश्यां मङ्गलाशासनं कृतम्॥९॥

श्रीलभक्तिवेदान्त नारायण महाराजजीके शिष्यवत् भावनाके अनुसार मुझ श्रीवासुदेवकृष्ण चतुर्वेदीने कार्तिक शुक्ल त्रयोदशीके दिन श्रीवृन्दावन स्थित आनन्दधाममें आयोजित सभामें मञ्चपर ही इस मङ्गलवाचनरूपी अष्टककी रचनाकर समर्पित किया है॥९॥

[श्रीभगवत पत्रिका वर्ष—४७,
संख्या—११ से संग्रहीत]

[श्रीवासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी पी.एच.डी., डी.लिट्, साहित्यरत्न व्रजके प्रख्यात विद्वान, यू.पी रत्न आदि उपाधियोंसे विभूषित और सप्ताचार्य हैं। ये 'श्रीश्रीभागवत–पत्रिका' में सहकारी सम्पादक संघके संघपतिके रूपमें गत ४६ वर्षोंसे अपनी अभूतपूर्व सेवाएँ अर्पित कर रहे हैं।]

"परमभागवतजन साक्षात् तीर्थस्वरूप हैं"

श्रीमद्भक्तिजीवन आचार्य महाराज

(श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीकी व्यास-पूजाके उपलक्ष्यमें लिखित)

महातीर्थ स्वरूप शुभ आविर्भाव तिथिकी उपस्थिति

महाराज श्रीयुधिष्ठिरने परमभागवत श्रीविदुरजीसे कहा था—

भवद्विधा भागवतास्तीर्थभूताः स्वयं विभो।
तीर्थीकुर्वन्ति तीर्थानि स्वान्तःस्थेन गदाभृता॥

(श्रीमद्भा० १/१३/१०)

हे प्रभो! आप जैसे भागवतजन तो स्वयं ही तीर्थ-स्वरूप होते हैं, क्योंकि वे अपने अन्तःकरणमें स्थित गदाधारी भगवान्‌की पवित्रताके बलसे पापियोंके पाप द्वारा मलिन समस्त तीर्थोंको पुनः पवित्र कर देते हैं।

श्रीयुधिष्ठिर महाराज द्वारा श्रीविदुरजीको इस प्रकार कहनेका तात्पर्य है—आप जैसे महाभागवतोंके लिए तीर्थ-भ्रमणकी क्या आवश्यकता है? अर्थात् यद्यपि गदाधारी भगवान्‌को हृदयमें धारण करके आप स्वयं ही तीर्थ-स्वरूप बन गए हैं, तथापि आप जैसे महाभागवतगण क्यों तीर्थ-भ्रमण किया करते हैं? निश्चित रूपसे तीर्थ-स्थानोंको तीर्थका गुण प्रदान करनेके लिए ही आप तीर्थ-भ्रमण करते हैं।

इसी प्रकार परमपूज्यपाद श्रीभक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजकी शुभ आविर्भाव तिथि (दिवस) रूपी महातीर्थ उपस्थित हुआ है। [अर्थात् पूज्यपाद श्रील नारायण महाराज शुभ मौनी अमावस्या तिथि (दिवस) रूपी तीर्थको महातीर्थ बनाते हुए आविर्भूत हुए हैं।]

संक्षिप्त जीवन-चरित्र

श्रील नारायण महाराज बिहार प्रदेशके बक्सर जिलेमें शुद्ध ब्राह्मण परिवारमें आविर्भूत हुए थे। जब वे सरकारी पुलिस अफसरके रूपमें बिहारके साहेबगंज क्षेत्रमें कार्यरत थे, उस समय मेरे परमाराध्य गुरुदेव श्रीमद्भक्तिकमल मधुसूदन गोस्वामी महाराज (उस समय श्रीनरोत्तमानन्द ब्रह्मचारी) बिहारके राजमहल आदि स्थानोंमें प्रचार करनेके उपरान्त साहेबगंजमें आकर प्रचार कर रहे थे। उसी समय पूज्यपाद महाराजने घटनाक्रमसे श्रील गुरुदेवका साक्षात्कार प्राप्त किया। पूज्यपाद नारायण महाराज श्रीमन्महाप्रभुके अत्यन्त निजजन हैं, इसीलिए साधुके दर्शनमात्रसे आकृष्ट होकर उन्होंने श्रील गुरुदेवके निकट सम्पूर्ण रात्रि हिन्दी और अंग्रेजीमें प्रश्न किये तथा उत्तरमें श्रीलगुरुदेवसे समग्र रात्रि हरिकथा श्रवण की। ऐसी

श्रीलभक्तिवेदान्त आविर्भाव तिथि

श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी प्रणतिः

नमः ॐ विष्णुपादाय गौरकृष्णप्रियाय च।
श्रीमते भक्तिवेदान्त नारायणाय ते नमः॥१॥

श्रीगौरकृष्ण (गौर और कृष्ण) के प्रिय अथवा गौररूपी कृष्णके प्रिय ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामीको मैं पुनः पुनः प्रणाम करता हूँ॥१ ॥

रूपानुगरसज्ञाय रागभक्तिप्रदायिने।
विश्वप्रचारकोत्तमयतीन्द्राय नमो नमः॥२॥

श्रीरूपानुग–धाराके सेवारसके विषयको पूर्णतः जाननेवाले, व्रजकी रागभक्तिको प्रदान करनेवाले, विश्वप्रचारकोंमें प्रमुख तथा यतियोंके राजको मैं पुनः पुनः प्रणाम करता हूँ॥२ ॥

रमणमञ्जरीनाम्ना निकुञ्जयुगलार्चने।
विनोदसङ्गरङ्गाय धीमते प्रभवे नमः॥३॥

निकुञ्जभवनमें श्रीश्रीयुगलकिशोरकी प्रेम–सेवामें विनोदमञ्जरीके सङ्गमें 'रमणमञ्जरी' नामसे अनेक

नारायण गोस्वामी महाराजकी पूजामें दीनकी वाणीरूपी पुष्पाञ्जलि

श्रीमद्भक्तिसर्वस्व गोविन्द महाराज

रङ्ग(विनोद)पूर्ण सेवाओंको करनेवाले, सुबुद्धिमान तथा प्रभावशाली श्रीलभक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजको मैं प्रणाम करता हूँ॥३ ॥

गुरु, आचार्य, देशिक, व्यास, विष्णुपादादि संज्ञाओंका तात्पर्य

श्रीगुरुपूजाका नामान्तर श्रीव्यासपूजा है। तत्त्वतः श्रीगुरुदेव व्यासदेवके अभिन्न विग्रह हैं एवं 'व्यास' कहलाने योग्य हैं, क्योंकि वे शरणागत शिष्यके हृदयमें वेदोंके अर्थोंका प्रकाश और विस्तार करते हैं। दिव्यज्ञानका उद्गीरण (उद्गार) करने हेतु उनको 'गुरु' कहते हैं; आचरण करके दूसरोंको आचरणमें स्थापन करने हेतु उनको 'आचार्य' कहते हैं; तत्त्व उपदेशक हेतु उन्हें 'देशिक' कहते हैं [देशिक शब्दका समास इस प्रकार हुआ है—'दिशति उपदिशति इति देशिकः' अर्थात् जो दिशानिर्देश या उपदेश प्रदान करते हैं, वे देशिक हैं]; वेदोंके अर्थका विस्तार करने हेतु उन्हें 'व्यास' कहते हैं [व्यास शब्दका समास इस प्रकार हुआ है—'व्यस्यते अनेन इति व्यासः' अर्थात् जिनके द्वारा वेदोंका अर्थ विस्तारित होता है, वे व्यास हैं] एवं विष्णुप्राप्ति कराने हेतु उन्हें 'विष्णुपाद' कहते हैं [विष्णुपाद शब्दका समास इस प्रकार हुआ है—'विष्णुःपद्यते लभ्यते येन स विष्णुपादः' अर्थात् जिनके द्वारा श्रीविष्णुके श्रीचरणकमलोंमें आश्रय प्राप्त होता है अथवा श्रीविष्णुकी प्राप्ति होती है, वे विष्णुपाद हैं]।

श्रीगुरुके विभिन्न स्वरूप

'गुरु कृष्णरूप हन शास्त्रेर प्रमाणे' (श्रीचैतन्य चरितामृत आदि १/४५) [अर्थात् शास्त्रोंके प्रमाणोंके अनुसार श्रीगुरुदेव श्रीकृष्णका ही रूप (प्रकाश) हैं।], 'आचार्यं मां विजानीयात्' (श्रीमद्भा० ११/१७/२७) [अर्थात् भगवान् श्रीकृष्णने उद्धवसे कहा—हे उद्धव! आचार्य (श्रीगुरुदेव) को मेरा स्वरूप जानो।] तथा 'गुरुं शान्तं उपासीत मदात्मकम्' (श्रीमद्भा० ११/१०/५) [अर्थात् मुझसे अभिन्न, शान्त गुरुकी उपासना करो।] पदोंमें श्रीगुरुदेवको कृष्णस्वरूपवान कहा गया है।

कृतज्ञता

श्रीमद्भक्तिविबुध बोधायन महाराज

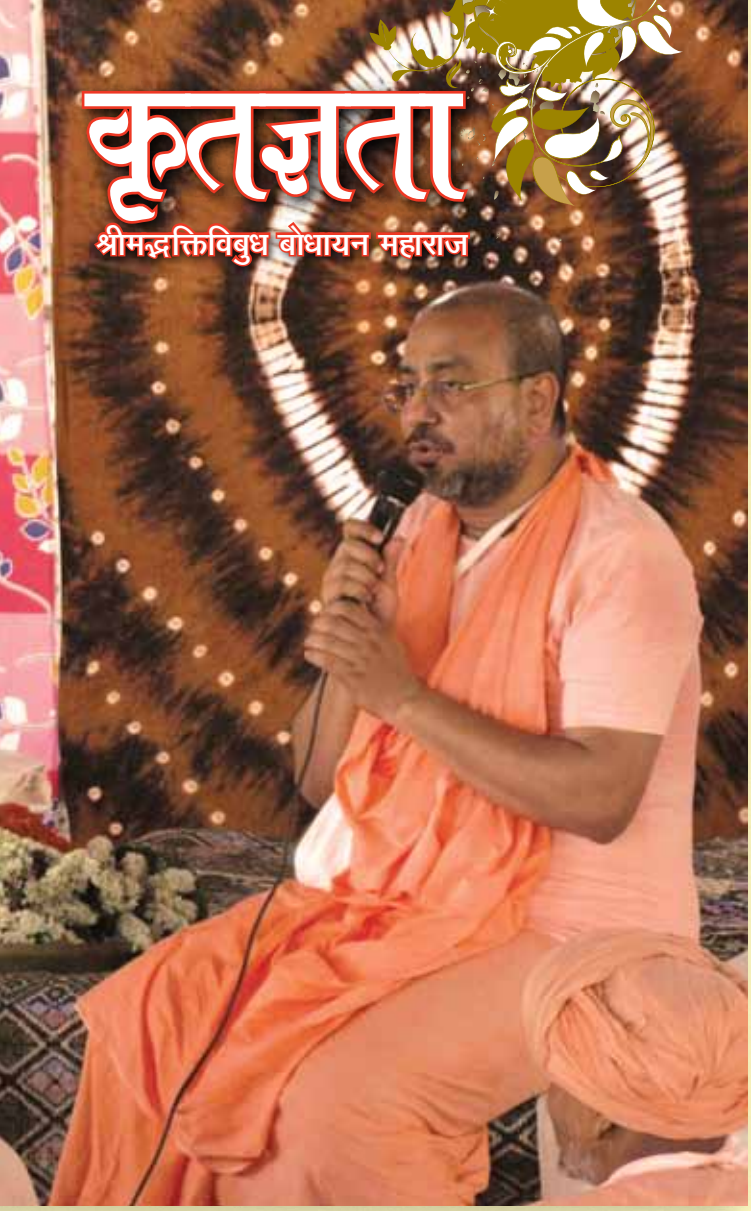

श्रीमन्महाप्रभुके मिशनको आगे बढ़ानेका उपदेश दिया। मैं आज तक पूज्यपाद महाराजके इस उपदेशका पालन कर रहा हूँ। इस उपदेशका पालन करनेसे मुझे वैष्णव समाजमें रहते हुए सहनशील होनेके लाभका अनुभव हो रहा है, जिसके फलस्वरूप मैं भक्तिमार्गका शान्तिपूर्वक अनुशीलन कर पा रहा हूँ।

यद्यपि २९ दिसम्बर, २०१० को श्रीजगन्नाथ पुरी–धाममें श्रील नारायण गोस्वामी महाराजने शारीरिक रूपसे इस मर्त्य जगत्को त्याग दिया, तथापि यदि हम उनके आनुगत्यमें जीवन यापन करते हैं, तो श्रील महाराजजी सदैव हमारे साथ ही हैं। हमें हरिकथाओंके माध्यमसे दिये गये उनके सन्देशका अवश्य ही आचरण करना चाहिये तथा उनके अमूल्य भक्तिग्रन्थोंका भी अनुशीलन करना चाहिये, तभी हम षड्गोस्वामियोंके उपदेशोंका यथार्थ अर्थ अवलोकन करने और समझनेमें सक्षम होकर मर्त्य जगत्के दुःखसे अपना उद्धार करनेकी योग्यता प्राप्त करेंगे। आजसे हमारे पास श्रील महाराजजीकी सेवाका एकमात्र सुयोग है—उनकी वाणीका पालन करना। वास्तवमें महापुरुषोंकी वाणी–सेवा ही हमें उन महापुरुषोंके निकट रखेगी।

मैं अति दीनतासहित श्रील नारायण गोस्वामी महाराजके चरणकमलोंमें यही प्रार्थना करता हूँ कि वे कृपापूर्वक मुझे अपनी वाणी–सेवामें नियुक्त होनेका बल प्रदान करें जिससे कि मैं अपने सम्पूर्ण जीवनको गुरु–परम्पराके आश्रयमें श्रीमन्महाप्रभुके मिशनका विशुद्ध रूपसे प्रचार करनेमें नियोजित कर सकूँ

निताई गौर–हरिबोल!!

शुद्ध–भक्तोंकी चरणधूलिके कणका अभिलाषी
स्वामी भ.वि.बोधायन
२९ दिसम्बर २०१०

[श्रीमद्भक्तिविबुध बोधायन महाराज नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिप्रमोद पुरी गोस्वामी महाराजके शिष्य हैं। वे अपने गुरुदेव द्वारा स्थापित श्रीगोपीनाथ गौड़ीय मठके वर्तमान आचार्य हैं। वे समग्र भारत और विश्वमें श्रीचैतन्य महाप्रभुके सन्देशका प्रचार करते हुए भ्रमण करते हैं।]

व्रजके विख्यात विद्वानोंकी पुष्पाञ्जली

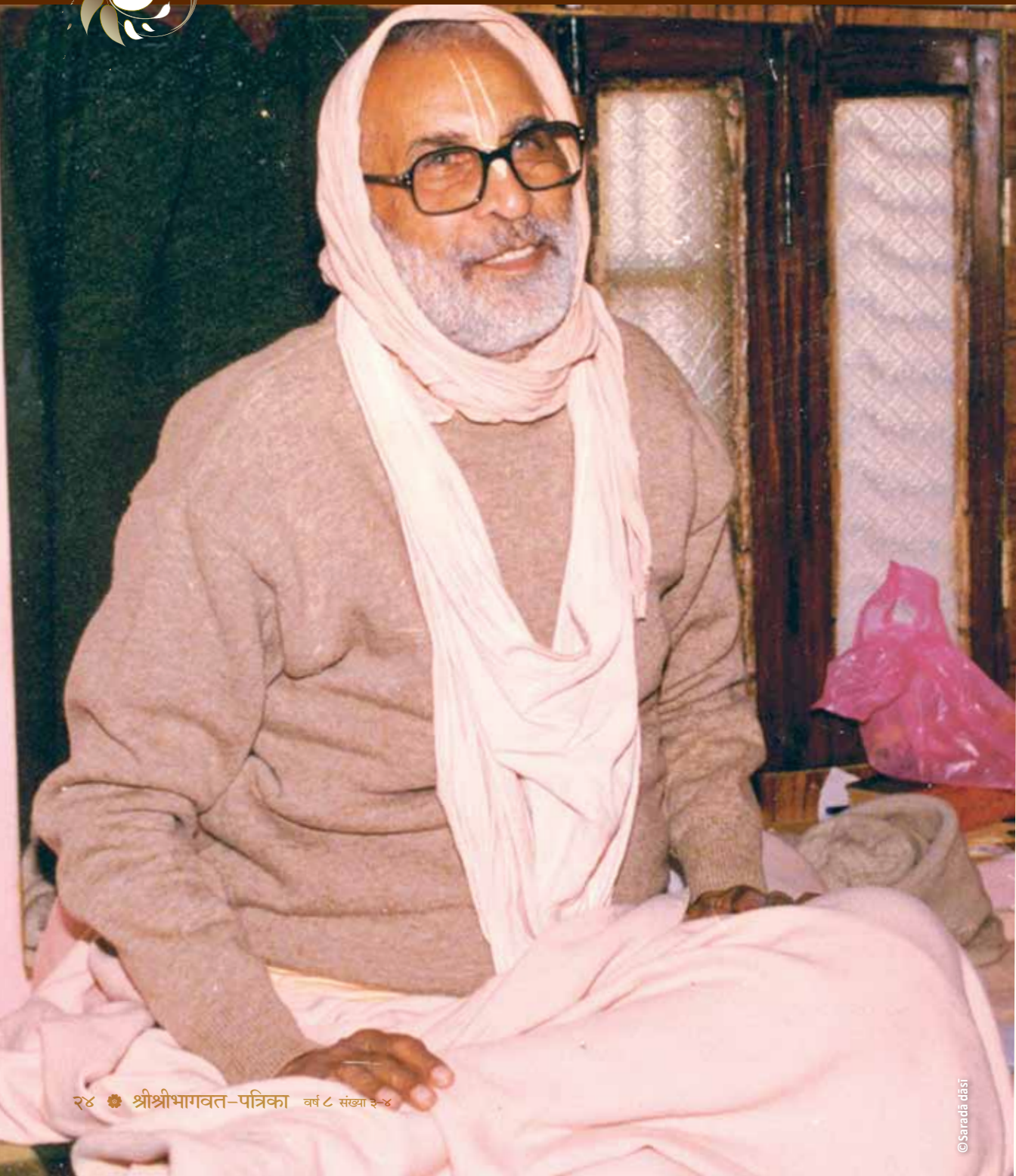

©Sarada dasi

परहितकर्ता पूज्यश्री महाराजजीकी मेरे प्रति कृपा

डॉ. वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी,
डी.लिट्, सप्ताचार्य

के द्वारा १४ जनवरी २०११ को श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, मथुरा धाममें आयोजित विरहसभा समारोहमें निवेदित वाचिक पुष्पाञ्जलि

परहितकारी पूज्य महाराजश्री

पूज्य त्रिदण्डीस्वामी अष्टोत्तरशतश्री श्रीभक्तिवेदान्त नारायण महाराजजीने जगत्‌को उन दुर्लभ विषयोंसे अवगत कराते हुए उनका दान दिया है, जो वर्तमान समयमें न तो कहीं सुननेको मिलते हैं और न ही किसीके द्वारा दान देते हुए दिखलायी पड़ते हैं। इसका कारण है कि पूज्य महाराजश्री केवलमात्र परोपदेशक (अर्थात् दूसरोंको केवल उपदेश देनेवाले) ही नहीं, अपितु परहितकर्ता (अर्थात् दूसरेके हितका कार्य करनेवाले) भी थे।

मेरे प्रति कृपा

महाराजश्री सबसमय दूसरोंका हित करनेमें व्यस्त रहते थे। विशेषतः पूज्य महाराजश्रीने मेरे लिए हितकार्य करके मेरे ऊपर जो कृपा की है, उसके लिए मैं महाराजश्रीके निकट चिर–कृतज्ञ हूँ। वे अनेक बार मुझे प्रोत्साहित किया करते थे। मैं इसे निम्नलिखित चार–पाँच उदाहरणोंके द्वारा स्पष्ट करना चाहता हूँ।

श्रीभागवत–पत्रिकामें सहकारी सम्पादक तथा संघपतिके रूपमें सेवा–भार प्रदान

मुझे पूज्य महाराजश्रीका प्रथम मंगल–आशीष वर्ष १९६४ ई॰ में प्राप्त हुआ, जब उन्होंने मुझे उस वर्षसे श्रीभागवत–पत्रिकाके सहकारी सम्पादक–संघमें सहकारी सम्पादकके रूपमें सेवा–भार अर्पित किया। परवर्तीकालमें उन्होंने मुझे उस संघके 'संघपति' के रूपमें भी नियुक्तकर मुझपर कृपा–वर्षण की। वे समय–समयपर मुझे श्रीभागवत–पत्रिकाके लिए लेख लिखने हेतु भी प्रेरित करते थे।

श्रीमद्भागवतकी पात्रानुक्रमणिका, स्थानानुक्रमणिका आदि प्रकाश करनेका आदेश

पूज्य महाराजश्रीने एकबार मुझसे कहा— "श्रीमद्भागवतपर पण्डितों द्वारा अनेक कार्य किया गया है, संस्कृतकी अनेक टीकाएँ की गयी हैं। किन्तु मैं चाहता हूँ कि आप श्रीमद्भागवतपर कोई ऐसा कार्य करें, जो जगत्‌में

महान युगपुरुष तथा वर्तमान आचार्योंमें अग्रगणीय—श्रीभक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज

डॉ. गोस्वामी अच्युत लाल भट्ट

भारत तथा विश्वमें अतीतकी विचार प्रणालियोंकी अवस्था

विश्वके अन्य देशोंमें जहाँ वर्तमानके विचारों एवं अतीतके विचारोंमें हुए द्वन्द्वमें वर्तमानके विचार समूह प्रभावशाली रहे हैं और अतीतके विचार समूह निष्क्रिय और निरर्थक हो गये हैं, वहीं भारतवर्षमें अतीतके विचार समूह आज भी उपयोगी होकर सार्थक बने हुए हैं, प्रेरणा स्वरूप बने हुए हैं तथा वर्तमानके साथ संघर्ष करते हुए सफल होकर विराजित हैं।

तीन आधुनिक विचार धाराएँ और विश्वभरमें उनका प्रभाव

चिरकालीन विचार प्रणालियोंको अस्वीकारकर स्वार्थपोषक और वर्तमान केन्द्रित विचार प्रणालियोंको प्रधानता देनेवाली तीन आधुनिक विचार धाराओंका वर्तमान जगत्की जीवन–पद्धतिको स्थापित करनेमें प्रमुख योगदान रहा है—(१) डारविनका 'विकासवाद' [Theory of evolution] जिसने मत्स्य सिद्धान्त अर्थात् "survival of the fittest" को जीवन दर्शन बना दिया और उसका परिणाम हुआ—प्रतिस्पर्धा, हिंसा तथा आतंक आदि। (२) कार्ल मार्क्सका 'साम्यवाद' [Communism] जिसका आधार था उत्पादनके साधनोंपर 'सर्वहारा' (उत्पादन करनेवाले वर्ग) का अधिनायकत्व। इस विचार प्रणालीका परिणाम हुआ— द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद एवं वर्ग–संघर्ष। इसके फलस्वरूप अहिंसा, त्याग, दया तथा बन्धुत्व आदि गुण समूह एवं वर्णाश्रम व्यवस्था जैसी सर्वांग सुन्दर व्यवस्थाको निरर्थक बनानेका प्रयास हुआ तथा (३) फ्रायड़का 'स्वप्न–सिद्धान्त' [Psycho-analysis and theory of dreams] जिसमें वासनाओंको शम, दम और सहनशीलतासे जीतनेके स्थानपर उनकी उन्नतिको प्रोत्साहित किया गया। इसके प्रचारका यह परिणाम हुआ कि विश्वमें सर्वत्र उन्मुक्त उच्छृंखल–भोगवाद दावानलकी तरह फैल गया।

आधुनिक भौतिक–विज्ञानकी उन्नति एवं सूचना तकनीकने "वर्त्तमान केन्द्रित" जीवन पद्धतिको अधिकांश लोगोंके शैय्याघर (bedroom) तक पहुँचा दिया है। इन्हीं

दिव्यसूरि पूज्य महाराजश्री अदृश्य नहीं, बल्कि विशिष्टरूपमें श्रीकृष्णके धाममें विराजमान

श्रीविष्णु पाण्डे (शास्त्रीजी)

के द्वारा १० जनवरी २०११
को श्रीरूप-सनातन गौड़ीय मठ
श्रीवृन्दावन धाममें आयोजित विरहसभा
समारोहमें निवेदित वाचिक पुष्पाञ्जलि

आचार्य—साक्षात् भगवत्स्वरूप

सन्त और आचार्य—ये दोनों साक्षात् भगवत्स्वरूप ही होते हैं। भगवान् भक्तोंके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं चाहते हैं। भगवान्ने श्रीदुर्वासा ऋषिके समक्ष कहा था—

नाहमात्मानमाशासे मद्भक्तैः साधुभिर्विना।
श्रियञ्चात्यन्तिकीं ब्रह्मन् येषां गतिरहं परा॥

(श्रीमद्भा० ९/४/६४)

अर्थात् हे ब्रह्मन्! जिनका एकमात्र आश्रय मैं ही हूँ, उन साधु-स्वभाववाले भक्तोंके अतिरिक्त मैं न तो स्वयंको चाहता हूँ और न ही अपनी उस लक्ष्मीको, जिसका कभी भी विनाश नहीं होता।

विशिष्ट रागसे युक्त पूज्य महाराजश्री

यद्यपि साधारणतः 'वैराग्य' का अर्थ—'गुणेषु असंगो वैराग्यम्' [अर्थात् प्राकृत गुणोंके संसर्गसे रहित होना ही वैराग्य है] किया जाता है, तथापि 'वैराग्य' शब्दका यथार्थ तात्पर्य—'विशिष्टो रागाः इति विरागः, विरागस्य भावः वैराग्यम्' [अर्थात् जो विशिष्ट अर्थात् विशेष प्रकारका राग है, वही वैराग्य है] ही विशेषरूपसे स्वीकृत है।

ऐसा विशेष राग युक्त वैराग्य वैष्णव सन्त और पूज्य महाराजश्री जैसे आचार्योंमें ही देखनेको मिलता है।

भक्तजन—भगवान्को अपने स्वरूपसे भी अधिक प्रिय

विशेष रागयुक्त वैराग्यसे विभूषित गुणोंवाले वैष्णवोंके उद्देश्यसे ही श्रीमद्भागवतके एकादश स्कन्धमें भगवान् दो श्लोकोंके माध्यमसे अपने हृद्गत भावोंके विषयमें बतला रहे हैं। प्रथम श्लोकमें श्रीकृष्णने इस प्रकार कहा—

न तथा मे प्रियतम आत्मयोनिर्न शङ्करः।
न च सङ्कर्षणो न श्रीर्नैवात्मा च यथा भवान्॥

(श्रीमद्भा० ११/१४/१५)

पूज्य महाराजश्री—रागानुगा-भक्तिकी जीती-जागती (जीवन्त) प्रतिमूर्ति

गोस्वामी श्रीदीपक कुमार भट्ट

के द्वारा ९ जनवरी २०११ को श्रीगिरिधारी गौड़ीय मठ, गोवर्धनमें आयोजित विरहसभा समारोहमें निवेदित वाचिक पुष्पाञ्जलि

प्यारे वैष्णवों, उपस्थित विद्वत् जनों! आपलोगोंके बीचमें [मैं] एक व्रजवासी बालक बैठा हूँ। क्षमा सहित कुछ अनुरोध कर रहा हूँ—

व्रजवासियों द्वारा गान की जानेवाली हरिकथासे ही त्रिभुवन पवित्र

व्रजगोपियोंके उद्देश्यसे उद्धवजीने कहा है—

वन्दे नन्दव्रजस्त्रीणां पादरेणुमभीक्ष्णशः।
यासां हरिकथोद्गीतं पुनाति भुवनत्रयम्॥

(श्रीमद्भागवत १०/४७/६३)

अर्थात्, मैं श्रीनन्दराजके व्रजकी गोपियोंके चरणकमलोंकी धूलिकी बार-बार वन्दना करता हूँ, जिनके द्वारा गान की जानेवाली श्रीकृष्ण-कथा त्रिभुवनको पवित्र करती है।

पुनः अन्यत्र भी उद्धवजीने व्रजगोपियोंके विषयमें कहा है—

क्वेमाः स्त्रियो वनचरीर्व्यभिचारदुष्टाः,
कृष्णे क्व चैष परमात्मनि रूढ़भावः।
नन्वीश्वरोऽनुभजतोऽविदुषोऽपि साक्षा-
च्छ्रेयस्तनोत्यगदराज इवोपयुक्तः॥

(श्रीमद्भागवत १०/४७/५९)

अर्थात् अहो! कहाँ तो इन वनचरी गोपियोंका श्रीकृष्णके प्रति रूढ़भावमय परमप्रेम और कहाँ कृष्णभक्तिके विषयमें व्यभिचार दोषसे दुष्ट मेरे जैसे

वाणी–वैशिष्ट्य–सम्पद्—१

[श्रील गुरुदेव और श्रीमन्महाप्रभु]

[श्रील गुरुदेवके प्रकट कालमें उनकी हरिकथारूपी वाणी तथा प्रबन्धादिके माध्यमसे जगत्में गौड़ीय–वैष्णव विचार–धाराके अनेक वैशिष्ट्य प्रकाशित हुए हैं। यदि श्रील गुरुदेवको अप्राकृत विशेषताओंका अपार समुद्र कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। श्रील गुरुदेवकी कृपासे ही उनके वाणी–वैशिष्ट्यरूपी समुद्रको मन्थन करनेसे जिस अमृतधाराका सन्धान प्राप्त हुआ है, उसके अन्तर्गत 'श्रीमन्महाप्रभुके दानकी विशेषता' रूपी अमृत भी विद्यमान है। अत्यधिक गूढ़ तत्त्वोंको अति सरल सहजरूपमें व्यक्तकर देना ही श्रील गुरुदेवकी एक विशेषता थी। इस विशेषांकसे आरम्भ करके क्रमशः हम श्रील गुरुदेवके वाणी–वैशिष्ट्य–सम्पदको अत्यन्त यत्न और गौरवके साथ गौर भक्तवृन्दके समक्ष प्रस्तुत करनेकी चेष्टा करेंगे।]

©Saradā dāsī

श्रीश्रीमन्महाप्रभुके दानकी विशेषता

श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज

द्वारा श्रीचैतन्य महाप्रभुकी पञ्चशतवार्षिक आविर्भाव तिथिके
उपलक्ष्यमें वर्ष १९८६में लिखित प्रबन्धसे संकलित एवं अनुवादित

नमो महावदान्याय कृष्णप्रेम–प्रदाय ते।
कृष्णाय कृष्णचैतन्य नाम्ने गौरत्विषे नमः॥

(श्रीचैतन्यचरितामृत मध्य १९/५३)

अर्थात् महावदान्य, कृष्णप्रेम प्रदाता, कृष्णस्वरूप, कृष्णचैतन्य नामक, गौराङ्गरूपधारी प्रभुको नमस्कार है। [इस श्लोकमें संक्षेपमें श्रीमन्महाप्रभुका नाम, रूप, गुण और लीला वर्णित हुई है। अर्थात् उनका नाम—श्रीकृष्णचैतन्य, उनका रूप—गौरवर्ण, उनका गुण—महावदान्यता एवं उनकी लीला—'कृष्णप्रेम प्रदान' करना है।]

व्रजेन्द्रनन्दन श्रीकृष्ण ही सच्चिदानन्दघन परब्रह्म स्वयं–भगवान् हैं। वे अनादिकालसे अनन्तरूपोंमें आत्मप्रकाश करके विराजित हैं। उन समस्त प्रकाशोंमेंसे वासुदेव, नारायण, राम, नृसिंह आदि उनके अंश हैं—यह श्रुति, स्मृति, पुराण–शिरोमणि श्रीमद्भागवत् आदि शास्त्रोंके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त है।

परम भगवानके दो मूल नित्य–स्वरूप

परमब्रह्म, रसिकशेखर स्वयं भगवान् श्रीकृष्णका और भी एक नित्यस्वरूप है, किन्तु वह स्वरूप उनका अंश नहीं है; उनके उस स्वरूपमें भी स्वयं भगवत्ता नित्य–विराजित है। वह स्वरूप व्रजेन्द्रनन्दन श्रीकृष्णके समान श्यामवर्ण न होकर पीतवर्ण है।

श्रीमद्भागवतमें करभाजन ऋषिने कलियुगके आराध्य भगवत्स्वरूप एवं उनकी आराधना–प्रणालीके सम्बन्धमें इस प्रकार वर्णन किया है—

दान करनेके लिये जो परमकरुणावश कलिकालमें अवतीर्ण हुए हैं, सुवर्णकान्तिके द्वारा देदीप्यमान वे श्रीशचीनन्दन गौरहरि तुम्हारे हृदयमें स्फुरित हों।

तृतीय कारणके सम्बन्धमें श्रीलस्वरूप दोमादर गोस्वामीने उल्लेख किया है—

श्रीराधायाः प्रणयमहिमा कीदृशो वानयैवा—
स्वाद्यो येनाद्भुत—मधुरिमा कीदृशो वा मदीयः।
सौख्यञ्चास्या मदनुभवतः कीदृशं वेति लोभात्
तद्भावाढ्यः समजनि शचीगर्भसिन्धौ हरीन्दुः॥

(श्रीचैतन्यचरितामृत आदि १/६)

अर्थात् श्रीराधाके प्रणयकी महिमा कैसी है? मेरी अद्भुत मधुरिमा, जिसका श्रीराधा आस्वादन करती हैं, कैसी है? मेरी मधुरिमाकी अनुभूतिसे श्रीराधाको किस सुखकी प्राप्ति होती है?—इन तीन विषयोंमें लोभ उत्पन्न होनेपर श्रीकृष्णरूपी चन्द्रने शचीगर्भरूपी समुद्रसे जन्म ग्रहण किया।

यद्यपि समस्त भगवद्—अवतारोंके आविर्भावका मूल कारण—साधुजन रक्षा, असुर—विनाशन और धर्म—स्थापनादि—जीवोंके प्रति भगवद्—करुणाका ही परिचायक है, तथापि श्रीगौर—आविर्भावके अतिरिक्त अन्य किसी भगवद्—अवतारके आविर्भावके कारणोंमें 'करुणा' शब्दका स्पष्ट उल्लेख नहीं पाया जाता। अतएव अन्यान्य अवतारोंकी करुणाकी अपेक्षा श्रीगौरावतारकी करुणाका एक अपूर्व वैशिष्ट्य है। इस सम्बन्धमें नीचे कुछ विचार प्रदर्शित किये जा रहे हैं—

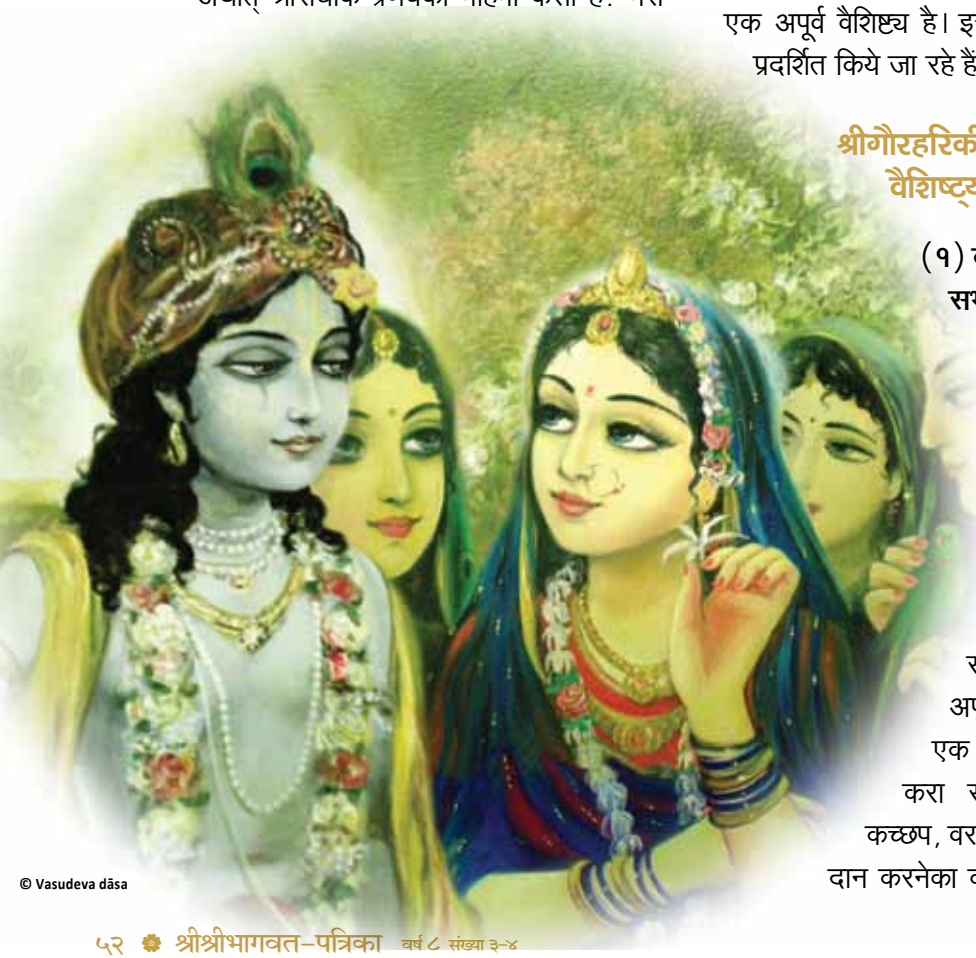
© Vasudeva dāsa

श्रीगौरहरिकी करुणाके आठ अभूतपूर्व वैशिष्ट्य

(१) केवल श्रीगौरहरि द्वारा ही सभीको भक्ति प्रदान

पहले कहा गया है कि साधुजनोंकी रक्षा और असाधुजनोंका विनाश करके धर्म—संस्थापनके लिये श्रीभगवान्‌ने असंख्य अवतार ग्रहण किये हैं। उनमेंसे वेदादि—शास्त्र एवं उनके सारभूत श्रीमद्भागवतके अनुसार अपार एवं अगाध समुद्र जिनके एक रोमको भी सर्वथा स्नान नहीं करा सके—ऐसे प्रतिभाशाली मीन, कच्छप, वराह आदि अवतारोंके द्वारा भक्ति दान करनेका कोई प्रश्न ही नहीं उठ सकता।

प्रकाशमें, नाम–प्रेम वितरणमें एवं सर्वोपरि श्रीकृष्णके अनुपम माधुर्यके रसास्वादनमें श्रीगौर–करुणाका जो महामाधुर्यमय और उल्लासमय विकास वैशिष्ट्य है, वह सर्वथा अनिर्वचनीय और अतुलनीय है। वह किसी युगमें अथवा किसी भगवद्–स्वरूपमें अभिव्यक्त नहीं हुआ है।

अतएव,

हे साधव! सकलमेव विहाय दूरात चैतन्यचन्द्र चरणे कुरुतानुरागम्।

(श्रीचैतन्यचन्द्रमृतम् १२०)

हे साधुजनो! सब कुछ दूरसे परित्याग करके ऐसे श्रीचैतन्यचन्द्रके चरणोंमें अनुराग उत्पन्न करें।

[श्रीगौड़ीय पत्रिका वर्ष–३८, संख्या–५–७ से अनुवादित]

श्रीश्रीभागवत पत्रिकाकी नयी Website:
www.bhagavatpatrika.com

श्रीश्रीगुरु–गौराङ्गकी कृपासे अब online में भी श्रीश्रीभागवत पत्रिका www.bhagavatpatrika.com नामक website पर उपलब्ध है। इस नयी website द्वारा श्रीश्रीभागवत पत्रिकाके कुछेक पुराने अंक एवं नयी संख्याओंके अंश download किये जा सकते हैं। साथ ही इस वर्षकी व्रत–तालिका भी download की जा सकती है। मुख्यत: अब इस website द्वारा श्रीश्रीभागवत पत्रिकाके नये सदस्य बनने या सदस्यता नवीकरण करानेके लिए सुविधा भारतीय तथा अन्तराष्ट्रीय भक्तोंके लिए उपलब्ध करायी गयी है।

विशेष ज्ञातव्य

श्रीश्रीभागवत–पत्रिकाके पाठकों और सदस्योंको सूचित किया जाता है कि श्रीपत्रिका इस सम्पूर्ण आठवें वर्ष श्रील गुरुदेव नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीभक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके विरह–विशेषांकके रूपमें प्रकाशित होगी। अत: इस वर्ष पत्रिकाकी दो–दो संख्याएँ एक साथ दो–दो महीनोंमें एक बार प्रकाशित होंगी।

श्रील गुरुदेवके प्रति अपनी कृतज्ञताका स्मरण करते हुए श्रील गुरुदेवके चरणाश्रित (१) श्रीमती सपना रमेश खण्डेलवाल (मुम्बई) तथा उनकी पुत्री (२) श्रीमती बरखा मयंक रावत (सिंगापुर) ने इस विरह–विशेषाङ्कके प्रकाशन हेतु आर्थिक योगदानके द्वारा विशेष सेवा–सौभाग्यको वरण किया है। इनकी विशेष सेवाके लिये श्रील गुरुदेव अपने नित्यधामसे इन पर विशेष कृपा वर्षित करें–यही श्रील गुरुदेवके अभय चरणकमलोंमें विनम्र प्रार्थना है।

'श्रीश्रीभागवत पत्रिका' का सम्पादक एवं कार्यकारी मण्डल

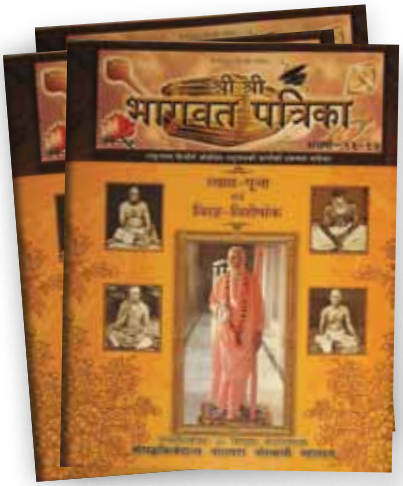

श्रीश्रीभागवत–पत्रिकाके ग्राहकोंसे वार्षिक सदस्यता–शुल्क भुगतानके लिए निवेदन

आदरणीय श्रीश्रीभागवत–पत्रिकाके ग्राहको!

आपसे पुनः यह निवेदन किया जा रहा है कि आपमेंसे जिन्होंने अभी तक इस वर्षका देय वार्षिक शुल्क भुगतान नहीं किया है, वह शीघ्र–अतिशीघ्र इस वार्षिक शुल्कका भुगतानकर पत्रिकाके माध्यमसे श्रीवैकुण्ठ–वार्त्तावहको नियमित रूपसे प्राप्त करनेके सौभाग्यका वरण करें।

श्रीश्रीभागवत–पत्रिकाके इस अष्टम वर्षमें समस्त अंक विरह–विशेषांक हेतु रंगीन और सचित्र प्रकाशित होंगे, अतः केवल इस अष्टम वर्षके लिए ही वार्षिक शुल्क भारतीय सदस्योंके लिए ३०० रुपये तथा विदेशी सदस्योंके लिए ३० अमेरिकन डालर किया गया है। हम अपने सभी सहृदय पाठक–भक्तोंसे इस विषयमें सहयोगकी आशा करते हैं।

इस वर्षसे सदस्यवृन्द निम्न प्रकारसे सहजरूपमें शुल्क भुगतान कर सकते हैं:

भारतीय सदस्योंके लिए

नये सदस्योंके लिए

कृपया www.bhagavatpatrika.com वैबसाइटपर जायें और वहाँ दिये गये Instructions के अनुसार सदस्य बनें।

सदस्यता नवीकरणके लिए

(१) Bank to bank NEFT transfer

Account name: SRI BHAGVAT PATRIKA SRI GOUDIYA
Account no. : 037201000010611
IFSC code: IOBA0000372
Bank: Indian Overseas bank

८७९१२७३३०६ phone number पर अपनी ग्राहक संख्या या अपना नाम और सदस्य शुल्कके साथ एक SMS भेजें।

अथवा

mathuramath@gmail.com में अपनी ग्राहक संख्या या अपना नाम और सदस्य शुल्कके साथ एक email भेजें।

(२) Demand draft or Cheque (account payee)

payable to:
"SRI BHAGVAT PATRIKA SRI GOUDIYA"
श्रीश्रीभागवत–पत्रिका कार्यालय,
श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, जवाहर हाट, मथुरा, उ.प्र.
२८१००१ के पतापर
Demand draft or Cheque भेजें।

(३) Money order

श्रीश्रीभागवत–पत्रिका कार्यालय,
श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, जवाहर हाट, मथुरा, उ.प्र.
२८१००१ के नामपर भेजें।

विदेशी सदस्योंके लिए

नये सदस्य तथा सदस्यता नवीकरणके लिए

कृपया www.bhagavatpatrika.com वैबसाइटपर जायें और वहाँ दिये गये instructions के अनुसार नये सदस्य बनें या अपनी सदस्यताका नवीकरण करें।

विदेशी सदस्योंके लिए इस वर्षसे "Paypal" द्वारा भुगतान करनेकी सुविधा उपलब्ध करायी गयी है। अधिक जानकारीके लिए www.bhagavatpatrika.com वैबसाइट देखें।

नारायण प्रभुं वन्दे करुणाघन-विग्रहम्।
रागमार्ग-भक्तिं दत्वा तारयति त्रिभुवनम्॥ १॥

मैं करुणाघनके विग्रह उन प्रभु श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीकी वन्दना करता हूँ जिन्होंने रागमार्ग-भक्तिका दानकर त्रिभुवनका उद्धार किया है।

सेवाकुञ्जे व्रजेरम्ये गोवर्धनगिरौ सदा,
राधाकुण्डे रसानन्दे तत्तत्सेवाप्रदायकम्।
गुरुं नारायणाख्यं तं वन्दे रमणप्रेष्ठकं,
यत्पादसंस्मृतिमात्रेण दामोदर प्रसीदति॥ २॥

मैं रमणीय व्रजमें स्थित श्रीसेवाकुञ्जमें, श्रीगिरिराज गोवर्धनमें तथा रसानन्दसे परिपूर्ण श्रीराधाकुण्डमें सदा उन उन स्थानोंके अनुरूप सेवाएँ प्रदान करनेवाले, श्रीरमणबिहारीजीके अत्यन्त प्रिय, उन श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज नामक श्रीगुरुकी वन्दना करता हूँ, जिनके श्रीचरणकमलोंके स्मरण करनेमात्रसे ही श्रीराधादामोदर प्रसन्न होकर कृपावर्षण करते हैं।

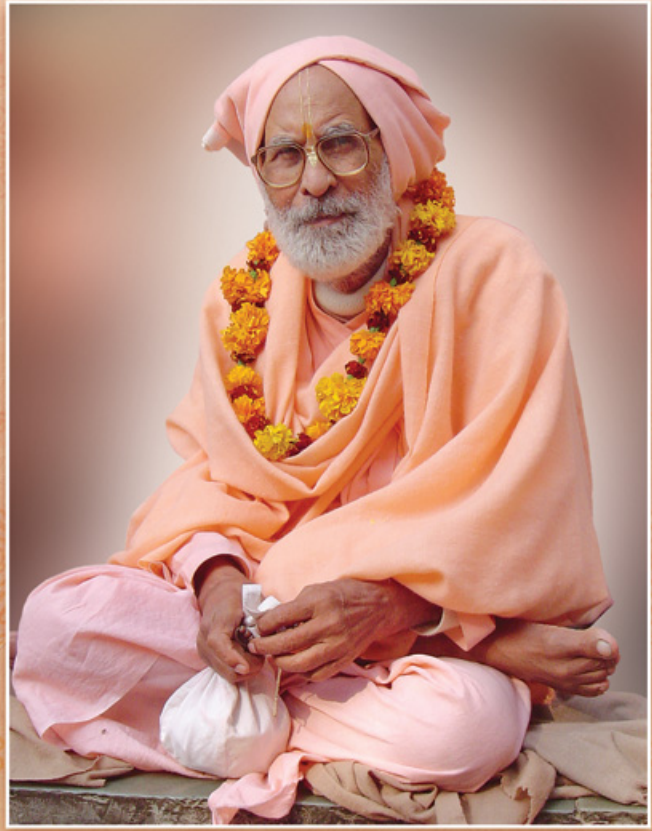

एबे यश घुषुक त्रिभुवन
हे श्रील गुरुदेव!
आपकी महिमा और यश तीनों लोकोंमें विघोषित हो।